अध्याय 4

विभिन्न वर्गों की पत्रिकाओं में मानवीय मूल्यों का स्थान

अध्याय - 4

विभिन्न वर्गों की पत्रिकाओं में मानवीय मूल्यों का स्थान

जीवन की विविधता और संचार–साधनों की प्रचुरता ने पत्रकारिता को बहुआयामी बना दिया है। जीव–जगत के हर कोने में पत्रकारिता पैठ गई है। **''समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्य–बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते है।''**

आज पत्रकारिता का उद्देश्य बहुआयामी हो गया है, जो केवल राजनैतिक घटनाओं से ही अवगत नहीं कराती है बल्कि सोई हुई शक्ति को जगाना, जीवन के यथार्थ को उभारना, जिज्ञासाओं को शांत करना, आनंद, संतोष और मानवीय मूल्यों को जगाना अर्थात समाज के सभी वर्गों के लोगों में उपर्युक्त मूल्यों को स्थापित करना एवं मार्गदर्शन कराना है।

पत्रकारिता हर वर्ग के लोगों की जिज्ञासा पूर्ति करती है जैसे समाजशास्त्री को सामाजिक व्यवस्था के बारे में जानकारी देती है, अतः मनुष्य को जागृत करने का प्रयोजन पत्रकारिता पूरा करती है। जिस प्रकार किसी पौधे के जीवन के लिए पानी, खाद और वायु की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार समाज के सभी वर्गों के लोगों में सर्वांगीण विकास के लिए पत्रकारिता की आवश्यकता है।

''पत्रकारिता वैचारित चेतना का उद्वेलन है, जो काल–धर्म की तीसरी आँख हैं।''

(आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.सं. २२)

1. विभिन्न वर्गों की पत्रकारिता का परिचय :

पत्रकारिता को विभिन्न वर्गों के आधार पर विभाजित किया जा सकता है। जिनमें से कुछ प्रमुख वर्ग निम्नलिखित हैं।

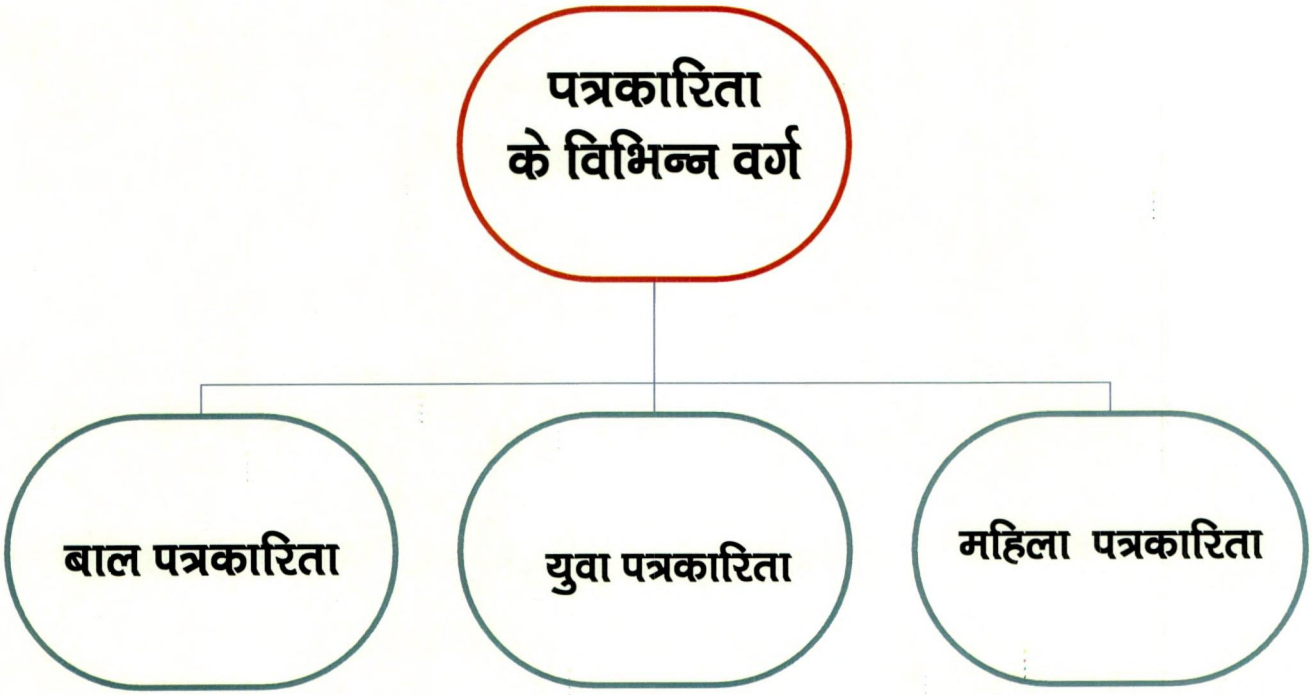

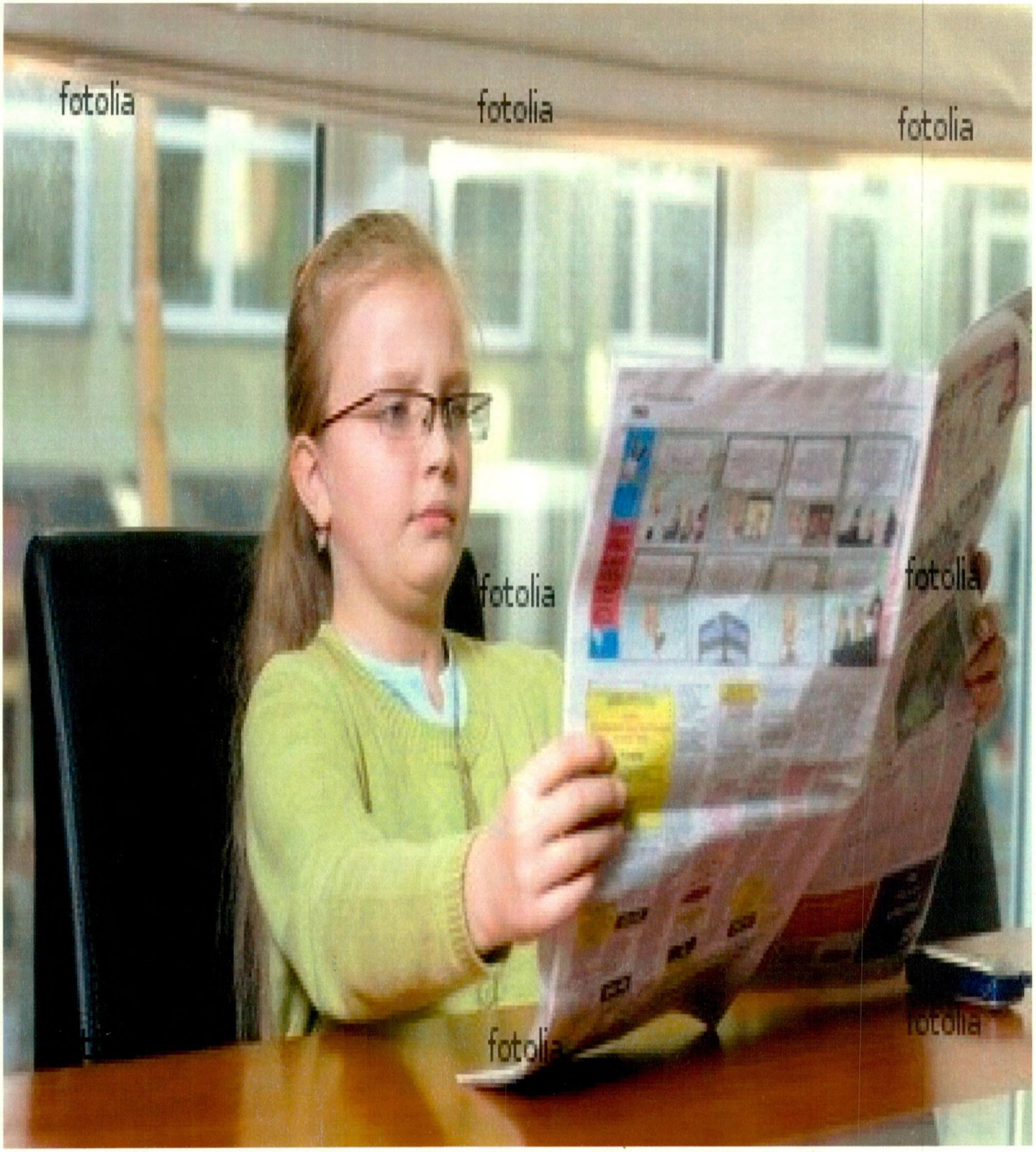

बाल पत्रकारिता

❖ बाल पत्रकारिता :

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि तथा उसका भावी विकास उसके बच्चों की स्वस्थता तथा तेजस्विता पर निर्भर करता है। लगभग तेरह वर्ष पूर्व संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1979 को 'अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष' घोषित किया था, तब वह नारा भी दिया गया था – **''बच्चों की मुस्कान, राष्ट्र की शान''।** वस्तुतः बच्चे की खिखिलाहट और किलकारियों में ही उसका भविष्य भी प्रतिबिम्बित होता है। रोता–बिलखता तथा अस्वस्थ बचपन भविष्य को भी विकलांग बना देता है। अतः व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के सुदृढ़ तथा समृद्ध भविष्य के निर्माण के लिए आवश्यक है कि हम बच्चों के संतुलित विकास की ओर उचित ध्यान दें।

बालक देश के दर्पण होते हैं। वे राष्ट्र की मुस्कुराहट है। बालक मनोविज्ञान के मूल है। वे ही शिक्षक की प्रयोगशाला है। बालकों में वर्तमान करवते लेता है और भविष्य के बीज उसी में बोये जा सकते हैं। बालकों के सम्यक विकास के लिए बाल पत्रकारिता अत्यन्त उपादेय है। बच्चों में अनन्त जिज्ञासाएँ होती है, वे दुनिया के हर विषय के हर तथ्य को जानने हेतु लालायित रहते है।

उनकी जिज्ञासा की शांति के लिए रंग–बिरंगे, मनोरंजन रूप में उन्हीं की भाषा में पत्र–पत्रिकाएँ निकल रही है। वयस्क और वयोवृद्ध पत्रकार बालकों की रुचियों, प्रवृत्तियों और उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप पत्र सम्पादित करते हैं। बाल–पत्रों के पत्रकार को सर्वज्ञ और एक शुद्ध बालक

होना पड़ता है। भविष्य के आदर्श नागरिक का वही कुम्हार है। वह राष्ट्र की महत्त्वाकांक्षाओं के अनुरूप बालकों को ढालने के लिए पत्र–पत्रिकाओं का सुसम्पादन करता है। बालोपयोगी रचनाओं के चयन, रंगीन चित्रों के सम्पादन, चुटकुले, हास्य–व्यंग्य और कार्टून–कॉमिक्स के द्वारा बाल–पत्रों को आकर्षक बनाया जा सकता है। **'बाल सखा', 'शिशु', 'बालक', 'पराग', 'नन्दन', 'राजाबेटा', 'किशोर', 'चन्दामामा', 'चुन्नू–मुन्नू', 'गुड़िया', 'बाल–भारती'** आदि पत्रों ने बच्चों की गतिविधियों पर प्रकाश डाला है।

ज्ञानवर्धक ललित लेखों, कविताओं, कहानियों और नयनाभिराम चित्रों द्वारा बाल–पत्रों ने बालकों को कर्तव्यपरायण बनाया है। मासिक, पाक्षिक पत्रों के अतिरिक्त दैनिक पत्रों के रविवासरीय अंकों में 'बाल स्तम्भ' के अन्तर्गत सुरुचिपूर्ण सुचित्रित सामग्री उपलब्ध होती है। राष्ट्र के चमकते सितारों से सम्बद्ध बाल–पत्रकारिता वस्तुतः सृजनात्मक पत्रकारिता है जिसके द्वारा बालको में नये गुणों की स्थापना होती है उसके साथ–साथ उन्हें और भी परिपक्व बनाती है जिसके कारण वह अपने भविष्य का निर्माण कर सके। अर्थात पत्रकारिता ही एक ऐसा साधन है जो बालकों में प्रारम्भ से ही अच्छे गुणों की स्थापना कर सके और समाज को नया रूप प्रदान करें।

''पत्रकारिता लोकनायकत्व की सहज विधा है, जो समाज की वाणी और मस्तिष्क है।''

(आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ. सं. १२)

युवा पत्रकारिता

❖ युवा पत्रकारिता :

युवा पत्रकारिता आज पूर्णतः उपेक्षित है और इस पर बहुत ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। आज का युग आधुनिकीकरण का युग कहलाता है जहाँ युवा वर्ग के लोगों को प्रभावित करने के रूप में कई नवीन माध्यम उपलब्ध है जिसके कारण पत्रकारिता का रोक कम हो गया है। लेकिन पत्रकारिता ही एक माध्यम है जो युवी पीढी को अपना दायित्व निभाने की प्रेरणा देते रहता है।

पत्रकारिता युवा वर्ग को ज्ञानवर्धन या मनोरंजन करने के साथ–साथ ईमानदारी, सच्चाई, सहृदयता, सहजता, सहिष्णुता, कर्मठता, न्यायशीलता, शालीनता, मर्यादा, आदर्श, प्रतिमान, चरित्र–निर्माण, नैतिक नियम, शुद्ध आचार–विचार, पवित्र संस्कार, धार्मिक विश्वास व धारणाएँ, मानसिक और बौद्धिक विचारों में पवित्रता, रहन–सहन, खान–पानख रीति–रिवाज आदि विषयों की जानकारी प्रधान करती है।

आज के युवा वर्ग ही कल के नागरिक कहलाते है। अर्थात उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक विषयों का भी ज्ञान होना चाहिए। युवा वर्ग की माँग और पसंद के आधार पर प्रकाशित की गई पत्रकारिता ही सफल पत्रकारिता हो सकती है जो युवा वर्ग तक शीघ्रता से पहुँच सकती है। सभी वर्गों से सशक्त एवं शक्तिशाली वर्ग युवा वर्ग ही है जिन्हें सही तौर पर एवं सही समय पर दिशा–निर्देशन करना पढ़ता है। अर्थात् युवा वर्ग में

एकाग्रता व प्रभावी व्यक्तित्व निर्माण करने में पत्रकारिता का हाथ सहायक सिद्ध होता है।

''युवा वर्ग पत्रकारिता में अपेक्षित सफलता पा लेते है तो वह केवल पत्रकारिता जगत के लिए नहीं वरन् संपूर्ण राष्ट्र के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा।'' **[www.google.com, wikipedia]**

महिला पत्रकारिता

❖ महिला पत्रकारिता :

आधी दुनिया से संदर्भित सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन की प्रस्तुति महिला पत्रकारिता है जो आबालवृद्ध के लिए आकर्षण का केन्द्रीय तत्व है। महिलाएँ पत्रकारिता में मानवीय पक्ष को प्रस्तुत करती है।

''नारी की करुणा अन्तर्जगत् का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए है।''

— डॉ. जयशंकर 'प्रसाद'

(आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.सं. २६)

नारी पूरी समस्या को सदाशतावश नये नजरिये से देखती हैं। आधी दुनिया अखबार को ताजगी और दृष्टि देती है। आज वह कौन सा क्षेत्र है जहाँ नारी कार्यरत नहीं है। आकाश की ऊँचाइयों में प्रगति के पर फैला नारी आश्चर्यजनक उड़ान भरने लगी है। हमें उस पर गर्व है। पर प्रगति का अर्थ अपनी परम्परा, मर्यादा तथा संस्कृति को भूलना नहीं है।

आधुनिकता की शर्मनाक आँधी से अपने को बचा कर रखना भारतीय महिला का पहला कर्तव्य है। काश, सह बात समझ में आ जाती तो खोती हुई लज्जा और भारतीय संस्कृति का बिगड़ता रूप हमारे सामने आ पाता। सदियों से लज्जा और नारी का अटूट सम्बन्ध रहा है, यहाँ तक कि लाज को स्त्री का आभूषण कहा गया है।

भारतीय नारी शब्द से एक सुन्दर–सी कंचन काया की साम्राज्ञी–लजाती–सकुचाती–सी एक सम्पूर्ण स्त्री की छवि आँखों के समक्ष उभर कर आ जाती है, जिसके हर भाव में मोहकता है, मादकता नहीं, आकर्षण है, अँगड़ाई नहीं। जिस्म के उतार–चढ़ाव को आँचल के तले महसूस कर सकते हैं उसके लिए प्रदर्शन की कोई आवश्यकता नहीं।

अदब का जमा लिये अपने मोहक हाव–भाव और तीखे नयन नकश से सौन्दर्यप्रेमी को प्रभावित करने वाली भारतीय नारी सिर से लेकर पैर तक लज्जा से सराबोर रही है। पर अब समय ने करवट बदल ली है, ऐसा लगने लगा है कि लज्जा और नारी का, भारतीय संस्कृति से जो अटूट सम्बन्ध था, वह टूट कर बिखरता जा रहा है।

कुछ समाज के एक हिस्से में अभी भी लज्जा की एक सीमा–रेखा है, स्त्रियाँ अभी भी लज्जा की एक सीमा–रेखा है, स्त्रियाँ अभी भी लज्जा की देवी मानी जाती हैं, घर और घर के बाहर भी उनका सम्मान करने वाला पुरुष है, पर अधिकांश समूह ऐसा है जो लाज को पिछड़ेपन की संज्ञा देकर आधुनिकता की निर्लज्ज फिजा में साँस लेकर अपने को अत्यधिक चतुर, मॉडर्न और सुशिक्षित समझने लगा है।

पत्रकारिता ने भारतीय नारियों को मुखर बनाया है।

''औरतें मर्दों से अधिक बुद्धिमान होती है; क्योंकि वे जानती कम, समझती अधिक है।''

– जेम्स स्टीफेन

(हिन्दी पत्रकारिता, सिद्धांत और स्वरूप, सविता चड्ढा, पृ.सं. ३२)

पत्रकारिता ने नारी–जाति में जागरूकता पैदा की है। दहेज–बलि, पति–प्रताडना, पत्नि–त्याग के समाचारों के प्रकाशन से मानव–समाज के अर्द्धांग को गौरवान्वित करना पत्रकारों का ही कार्य है। पत्रकारिता समाज में एक नई दृष्टि दी है आज भी हम महिलाओं को महराजिन, महरी, आया, धोबन, नर्स के रूप में ही देखते हैं।

वस्तुतः सभी महान् कार्यों के प्रारम्भ में औरतों का हाथ रहा हैं।

2. समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं के द्वारा मानवीय मूल्यों का अवलोकन,ग्रहणीयता एवं प्रतिपुष्ठि

पत्रकारिता समाज की एक प्रभावशाली संस्था है। आज पत्रकारिता में केवल समाचारों का ही संकलन नहीं होता है। समाचार पत्रों में विज्ञापन, विचार, विवेचन, विश्लेषण आदि के अलावा पत्रकारिता के सामाजिक दायित्व का बोध, समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना के साथ जन–जीवन को विकासोन्मुख बनाना पत्रकारिता का दायित्व है। अर्थात् पत्रकारिता का

कर्तव्य होता है कि वह सभी वर्गों के लोगों में मानवीय मूल्यों, मानवाधिकार, मानवीयता जैसे भावनाओं का प्रतिष्ठापन करें।

बाल पत्रकारिता और मानवीय मूल्य :

बाल पत्रकारिता भविष्य का अंकुरण होता है और बच्चे देश का भविष्य होते हैं, जैसी उक्तियों के संदर्भ में बाल पत्रकारिता अत्यंत उपादेय है। बच्चे समाज और जीवन के प्रति सर्वाधिक जिज्ञासु होते हैं। उनकी जिज्ञासा के अनुकूल उन्हीं की भाषा में ज्ञानवर्द्धक रोचक सामग्री देने का नाम ही बाल पत्रकारिता है। बाल पत्रकारिता का उद्देश्य उन्हें सुशिक्षित और सुशील बनाना है। अतः बाल पत्रकारिता के लिए बाल मनोविज्ञान का जानकार होना आवश्यक है।

पं. नेहरु के शब्दों में **'बच्चा एक पौधे के समान होता है जो माली की उचित सार–संभाल से प्राकृतिक प्रतिकूलताओं में भी खिलता–फूलता और विकसित होता रहता है। इसी प्रकार बच्चा भी माली रूपी अभिभावकों, शिक्षकों तथा जनसंचार माध्यमों की देखरेख में अपने पर्यावरण से प्रभावित होता हुआ वयस्क होता है।'**

बालक का परिवेश तथा उसकी शिक्षा, उसके व्यक्तित्व–निर्माण के दो प्रमुख तत्व हैं। ये व्यक्तित्व निर्माणकारी दोनों तत्व हमारे नियन्त्रण में

हैं। आवश्यकता है बालक को उसकी आवश्यकतानुसार अवसर तथा साधन उपलब्ध कराये जायें।

सत्य, अहिंसा, सेवाभाव, परोपकार, पारस्परिक सहभागिता, प्रेमभाव, विनय, उदारता, कर्तव्यनिष्ठता, प्रामाणिकता, सहिष्णुता, नियम–पालन, श्रम के प्रति निष्ठा, राष्ट्र–प्रेम, सामाजिक व्यवस्थाओं के प्रति सम्मानभाव, सर्वधर्म समभाव, साहस, निडरता, जाति–पाँति के भेद का त्याग आदि ऐसे सार्वजनिक मूल्य हैं; जिनका विकास हम बच्चों के व्यक्तित्व में देखना चाहते हैं। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि इन मूल्यों को बालकों में स्थापित करने का माध्यम क्या हो सकता है?

इसका उत्तर ''पत्रकारिता'' ही है जो उक्त सहज मानवीय मूल्यों को बच्चों में विकसित कर सकें। पत्रकारिता के तीव्र विकास, ज्ञान–विस्तार तथा औद्योगीकरण आदि के कारण आज सामान्य बालक के आई.क्यू में वृद्धि हो गई है। तीन–चार साल का बच्चा भी आज अपने परिवेश के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया करता है। उसकी उत्सुकता तथा कौतूहल की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है।

वह अपने आस–पास घटने वाली घटना को सूक्ष्मता से देखता है तथा अपने अभिभावकों व शिक्षकों से प्रश्न भी करता है। अपने प्रश्नों का वह उचित समाधान भी चाहता है। यदि हम उसकी इस कौतूहल प्रवृत्ति को रचनात्मक ऊर्जा प्रदान कर सकें तो उसका व्यक्तित्व निश्चय ही सकारात्मक

दिशा में विकसित होगा अन्यथा उसमें एक आत्म–ग्लानि, अपराध–बोध या उदासीनता का भाव उत्पन्न हो सकता है।

बच्चों की इस रचनात्मकता को पत्रकारिता के माध्यम से काफी प्रभावी ढंग से प्रेरित किया जा सकता है। आज के इस युग में जहाँ माता–पिता के पास इतना समय नहीं है कि वे बच्चों की रुचि के अनुरूप चरित्र–निर्माणकारी विषय या साधन उनके लिए उपलब्ध करा सकें, वही स्कूलों में बच्चों की संख्या अधिक होने तथा पाठ्यक्रम के दबाव आदि के कारण शिक्षक भी इस दृष्टि से असहाय–सा ही है।

ऐसी स्थिति में पत्रकारिता ही प्रभावी तथा उपयोगी संचार माध्यम है। आधुनिकीकरण यह एक ऐसा विरोधाभास है, जिसे हम नई जीवन–शैली के नाम पर ढोए जा रहे हैं। हमारी शहरी रहन–सहन हमें आधुनिकता के साथ चलने में सक्षम बनाता है, लेकिन अगर एक सेहतमंद शरीर में ही एक सेहतमंद दिमाग रहता है, तो हम सचमुच भयानक खतरे में हैं। और इस खतरे की बुनियाद तो बचपन से ही पड़ गई है।

ऐसा नहीं कि हमें बच्चों की गिरती सेहत का अहसास न हो, लेकिन कम से कम हम यह मान कर चलते थे कि समस्या ज्यादा बड़ी नहीं है और हम आधुनिकता के नाम पर जो क्षमता हासिल कर रहे हैं, वह इसका निदान साबित होगी। सर्वेक्षण बताते हैं कि बच्चे जिद्दी और चिड़चिड़े हो रहे

हैं, उनकी सामाजिकता गायब हो रही है और डिजिटल दुनिया में वे अकेले भटक रहे हैं।

उनमें व्यक्तिवाद बढ़ रहा है और वे स्वार्थ की हद तक आत्मकेन्द्रित हो रहे हैं। वे सक्षम और सफल होने की अनवरत छटपटाहअ में पिछड़ने के खौफ से घिरे रहते हैं। उनकी आक्रामकता उन्हें कई बार हिंसक बना देती है और जिन्दगी से उसका बर्ताव दोस्ती का नहीं, मुकाबले का है। यह आज के शहरी समृद्ध बच्चों की नई उलझनभरी दुनिया है। इस उलझनों को दूर करके बच्चों के चरित्र का निर्माण करने में पत्रकारिता का बढ़ा हाथ है।

पत्रकारिता बच्चों को सामाजिक बोध कराते–कराते उन्हें सफल जीवन जीने की कला सिखाता है। बच्चों में अच्छे संस्कार एवं अच्छे गुणों को निर्माण करने में पत्रकारिता का एक विशेष हाथ है। इन गुणों के साथ–साथ बच्चों में मानवीय मूल्यों को विकसित करने का कर्तव्य पत्रकारिता का ही है।

''स्कूलों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समग्र मानवीय मूल्यों की जानकारी दी जानी चाहिए।''

– डॉ. ए.पी.जी. अब्दुल कलाम

[www.webduniya.com]

देश में शिक्षक बच्चों में संस्कार और मानवीय मूल्यों को विकसित करने का कार्य ज्यादा पत्रकारिता का ही है। देश आज चाहे कितना भी आधुनिकीकरण की ओर बढ़ रहा हो फिर भी देश की संस्कृति और संस्कारों एवं समाज को सही रास्ता दिखाने का कार्य मानवीय मूल्य ही करता है।

बच्चों में शिक्षा नीति ही प्रमुख आयाम होते है जो समाज और प्रत्येक मानव में समन्वय, समाज में एकता, सरकारी सेवा में नारी दिशाएँ, नवीन मूल्य व नई नीति की स्थापना कर सकें।

युवा वर्ग में मानवीय मूल्यों की स्थापना :

आज के युवाओं को आधुनिकीकरण का नशा चढ़ा है। पश्चिमी देशों के रीति–रिवाजों और उनकी संस्कृति की हवा भारतवासियों को लगी है। विशेषतः युवाओं को इसका मोह अधिक है। आज पत्रकारिता युवा वर्ग के बीच अपनी विशिष्ट महत्ता स्थापित कर चुका है।

पत्रकारिता को अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करनेवाला दीपक या ज्योति माना जाता है। युवा पीढ़ी में, आत्मविश्वास जगाकर उनका मार्गदर्शन करने का श्रेय पत्रकारिता को ही है। आजकल स्कूलों और कालेजों में पत्रकारिता को बढावा दिया जा रहा है। समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तक पडने के लिए हर व्यक्ति पर बचपन से ही जोर दिया जाता है। समाचार पत्र और पुस्तक पढ़ने की आदत को एक अच्छी आदत मानी जाती है। पत्रकारिता आज के युवा वर्ग का अभिन्न अंग बन गया है।

पत्रकारिता से युवा वर्ग को राजनीति, नौकरी, सिनेमा, खेलकूद, खाद्य वस्तुओं का भाव, विवाह हेतु वर कन्या की तलाश, आर्य समाज, सनातन धर्म की चर्चा, पुस्तक समीचा आदि विषयों पर अपनी दृष्टि डालने के अलावा शील, संतोष, सत्य, प्रेम, अहिंसा, नैतिकता, लोकमंगल और लोककल्याण की भावना, मानवीय मूल्यों का सार्वजनिक जीवन में मूल्यांकन करना है।

पत्रकारिता युवा वर्ग के लोगों में एक नयी उदात्तवादी भावना को विकसित करती है। पत्रकारिता युवा वर्ग की जीवन पद्धति, आचरण, स्वभाव, गुणकर्म, अनुभवजन्य विकसित मूल प्रवृत्तियाँ, चारित्रिक गुणदोष, व्यक्तियों के प्रति व्यवहार, उनके प्रति किया गया कियाकलाप, अंग–प्रत्यंगों की पूर्णता, रूप सौन्दर्य, स्मरणशक्ति, कल्पनाशक्ति, ज्ञान, तर्क–वितर्क, चिंतन शक्ति, बौद्धिक और भावनात्मक प्रवृत्तियों को लेखन द्वारा सभी युवाओं तक पहुँचाने का कार्य करती है।

मानव मूल्यों से युक्त व्यक्तित्व का निर्माण करना ही पत्रकारिता का कर्तव्य है। मानव मूल्यों से युक्त व्यक्तित्व ऐसी अमर निधि है जिसकी सुन्दरता स्वयंमेव युवा वर्ग के सीमित, असुन्दर व छोटे स्वरूप को असीम, सुन्दरतम और महिमामय बनाकर उसको समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है। पत्रकारिता युवा वर्ग में नये मूल्यों का संचार कराने में बहुत ही सफल है।

महिला पत्रकारिता एवं मानवीय मूल्य :

आजकल नारी–जगत् से संबंधित पत्र–पत्रिकाएँ समय काटने और मनोरंजन के साधनस्वरूप हैं। ऐसी पत्रिकाएँ साज–शृंगार, फैशन, रूप–रंग को कैसे निखारें, घर को कैसे सजाएँ, पति को सुन्दर कैसे दिखें आदि पर ही जोर देती है। वस्तुतः स्त्रियों में सौन्दर्यानुभूति अधिक होती है। वे सुरुचिपसन्द और सलीकापसन्द होती है।

सजने–सँवरने में रुचि रखती हैं। इन प्रश्नों के अतिरिक्त विज्ञान, खेल, राजनीति, साहित्य विषयों में भी महिलाओं की भागीदारी होती है जिसके सन्दर्भ में पत्र–पत्रिकाओं को प्रकाश डालना चाहिए। कुछ पत्रिकाएँ नारियों की अपरिष्कृत और सतही रुचियों को बढ़ावा देती है। बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा, दहेज–प्रथा एवं अनेक सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में पत्रकारिता प्रभावकारी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

पत्रकारिता महिला समाज में भी उन्हीं मूल्यों की स्थापना करना चाहता है जो जीवन को नई आदर्श प्रदान करती है। महिलाओं की मानसिकता को परिमार्जित करने के लिए और महिलाओं में मानवीय मूल्यों को उजागर करने में पत्रकारिता महत्वपूर्ण कार्य करती है। पत्रकारिता के दौरान महिलाओं को सजने सँवरने के अतिरिक्त चतुर्दिक जागरण का शुभ संदेश प्राप्त होता है।

आज की पत्रकारिता ने नारी–जाति में जागरूकता पैदा की है। उसके कारण ही भारतीय नारियों को मुखर बनाया है।

"There is a women at the beginning of all great things".

- Law Martina

(हिन्दी पत्रकारिता : सिद्धांत और स्वरूप, सविता चड्ढा, पृ.सं. ६२)

मानव मूल्यों के कारण नारी जीवन सुन्दर होकर स्वर्णिमता का रूप धारण कर लेता है। यह नारी जीवन का सर्वोत्तम सार है। इससे नारी जीवन का उद्देश्य प्राप्त हो जाता है व यश, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है अर्थात् यह मूल्य मानव जीवन का सर्वस्व है, ऐसे दिव्य मानवीय मूल्यों में आत्मचेतना और सनातन सत्य की भावना बलवती होती है। अर्थात् पत्रकारिता ने महिला समाज में मानवीय मूल्यों को स्थापित करने एवं उन्हें प्रत्येक जनता तक पहुँचाने का कार्य पूर्ण रूप से किया है।

३. विभिन्न वर्गों की पत्रिकाओं में मानवीय मूल्यों की महत्ता एवं उपयोगिता :

बाल पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों की उपयोगिता एवं महत्ता :

आज कई पत्रिकाएँ है जो बच्चों में बहुत लोकप्रिय है। यही पत्रिकाएँ आगे बढ़कर उनके जीवन में अधिक वृद्धि करती है और यही पत्रिकाएँ उन्हें अच्छे नागरिक के प्रति अच्छे लेख और साहित्य प्रदान करते है वह बच्चों को मजबूत बनाती है, वे रेत की भाँति फिसलते नहीं। बाल

अवस्था में सुनी गई, पढ़ी गई अच्छी कहानियाँ बच्चों के जीवन को पूर्णतः विकसित होने में योगदान देती है।

जिस प्रकार हमें प्रतिदिन अच्छा भोजन, अच्छे वस्त्र आपेक्षित हैं, उसी प्रकार अच्छी पत्रकारिता भी बच्चों को विकसित करने में उसके मस्तिष्क को दृढ़ बनाने में सहायक भूमिका निभाती है। जब पुस्तकें या पत्रिकाएँ नहीं होती थी या कम होती थी तब माता–पिता अपने बच्चों को कहानियाँ सुनाया करते थे।

जिसमें कहानियों के साथ–साथ उन्हें सत्य, अहिंसा, अच्छाई, मानवीय मूल्यों, सद्कर्मों, मानवीयता, सहृदयता, शुद्ध आचरण, मर्यादा, आदर्श जैसे गुणों को भी बोया जाता है। जो आगे चलकर उनके जीवन में प्रकाश फैलाती है। और उन्हें सफल बनाती हैं। पत्र–पत्रिकाओं पर यह दायित्व आ जाता है कि वे इस प्रकार के विषयों को प्रकाशित करें, जो जीवन के यथार्थ तथा सम–सामयिक समस्याओं से जुड़कर उसका मनोवैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करे।

परिवर्तनशील सामाजिक परिवेश उसमें झलकता हो और जो आधुनिक भावबोध से अनुप्राणित हो। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाला विषय इस प्रकार का हो जो बच्चों के संवेदनशील मन को क्रियाशील बनाये, ना कि भाग्यवादी। अतः समग्र रूप से कहा जा सकता है कि पत्र–पत्रिकाओं की एक ऐसी सम्पादकीय नीति होनी चाहिए, जिस आधार पर

बच्चों के लिए प्रेरक, यथार्थ तथा उद्देश्यपूर्ण सामग्री का संयोजन, सम्पादन तथा प्रकाशन हो सके।

अर्थात् पत्रकारिता ही एक माध्यम है जो जीवन निर्माणकारी मानव मूल्यों एवं संस्कार को बाल्यकाल से ही अंकुरित करने लगेंगे तभी किशोर तथा युवावस्था में वह अपनी संपूर्ण शक्ति रचनात्मक कार्यों एवं जीवन मूल्यों के प्रति अधिक ध्यान रखेगा ना कि विध्वंस की ओर।

युवा वर्ग की पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों की महत्ता एवं उपयोगिता :

युवा वर्ग पत्रकारिता जगत के लिए नहीं वरन् संपूर्ण राष्ट्र के लिए कल्याणकारी सिद्ध होते हैं। आज के युवा वर्ग ही कल के नागरिक हैं। समय के बदलाव के साथ ही युवा वर्ग की माँग बदलती जाती है जो ज्यादातर आधुनिकीकरण की ओर खींचे जाते हैं। पर प्रश्न यह जाता है कि क्या, आज भी युवा वर्ग में वह मूल्य हैं जो मानवता, मानवीय मूल्यों जैसे गुण आज भी जीवित हैं? इस प्रश्न का उत्तर यही हो सकता है कि आज जनसंचार माध्यम और मीडिया इतनी तेज़ी से उन्नति प्राप्त कर रही है जिसके कारण उपर्युक्त गुणों के साथ ही अनेक नये मूल्य की प्रगति पत्रकारिता द्वारा संभव हैं।

पत्रकारिता को आगे लाने में सफल बनाने में आज के युवाओं का सहयोग आवश्यक है। युवा वर्ग देश की उम्मीदों का शक्तिशाली स्तूप है। आज के युवाओं के पास इतनी शक्ति है कि वे पत्रकारिता में निश्चित रूप से अपेक्षित सुधार तथा मानवीय मूल्यों की प्रगति कर सकें। अर्थात् युवा वर्ग

में एकाग्रता व प्रभावी व्यक्तित्व निर्माण करने में पत्रकारिता का हाथ सहायक सिद्ध होता है।

महिला पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों की महत्ता एवं उपयोगिता :

भारत उन विकासशील देशों में से है, जिनमें औरतों को सामाजिक विकास की व्यापक क्रिया में लानेवाले अनेक अच्छे कानून मौजूत है। और हर समाज की 'आधी दुनिया' होती है। पत्रकारिता ने नारी–जाति में जागरूकता पैदा की है। आज की पत्रकारिता महिलाओं को केवल सजने–सँवरने का ही जानकारी नहीं देता बल्कि उससे बढ़कर पत्रकारिता आज नारी समाज को चतुर्दिक जागरण प्रदान करती है वह महिलाओं को सही दिशा–निर्देश करता है और महिला समाज में मानवीय मूल्यों का जागृत करती है।

नारी आज नयी पीढ़ी के साथ चलने का पूर्ण प्रयत्न कर रही है और इसे सफल करने में पत्रकारिता अपनी पूर्ण भूमिका निभाती है। महिला में ममता, प्यार, स्नेह, आदर्श जैंसे गुणों के साथ ही मानवीयता तथा मानवीय मूल्यों को भी बढ़ावा दिया जाता है।

संसार की लगभग आधी जनसंख्या नारियों की है और आधी जनसंख्या पुरुषों की लेकिन इन दोनों के बीच असमानता की एक गहरी खाई अभी भी बनी हुई है। बहुत से देशों और समाजों में स्त्री के साथ आज भी अमानवीय व्यवहार किया जाता है। दुनिया के चिंतकों, विचारकों,

समाजशास्त्रियों, शिक्षाविदों ने स्त्री और पुरुष के बीच की खाई कम करने के लिए निरन्तर प्रयास किये हैं।

उन्हीं प्रयासों का आज यह प्रतिफलन है कि अब स्त्रियाँ पहले की तुलना में अधिक स्वच्छन्द एवं स्वावलम्बी बनी है; लेकिन इस दिशा में अभी भी बहुत काम करने की जरूरत है। इस जरूरत की पूर्ति के लिए पत्रकारिता की अपनी अहम् भूमिका निभा रही है। जो आजकल मानव मूल्यों को समाज में विकसित करने का प्रयास कर रहा है। पत्रकारिता का उद्देश्य केवल स्त्री के स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों को उजागर करना ही नहिं बल्कि नारी के सशक्तीकरण के उद्देश्य को भी पूरास करना है। इस प्रकार की पत्रकारिता का आग्रह सभ्य समाज की माँग है क्योंकि लिंग के आधार पर भेदभाव प्राकृतिक नियमों के सर्वथा विपरीत है।

स्त्री के सशक्तीकरण की माँग सबसे पहले पुरुषों ने ही शुरु की थी लेकिन धीरे–धीरे इसमें नारी समूह और स्वैच्छिक संगठन जुड़ते चले गये। अतः नारी को समाज के साथ–साथ चलने की पूर्ण सहायता पत्रकारिता प्रस्तुत करती है जो नारी सशक्तीकरण के साथ ही उन्हें जीवन मूल्यों से भी परिचित कराती हैं।

निष्कर्ष:

आधुनिक युग में पत्रकारिता का हमारे दैनिक जीवन में विशेष महत्व है क्योंकि वे हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक जीवन की समस्याओं का उन्मूलन कर समाधान प्रस्तुत करती हैं। पत्रकारिता समय और युग के अनुकूल विविध विषयों के प्रति नए विचार विश्व के सामने तथा मुख्य रूप से सभी वर्गों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास करती है।

पत्रकारिता का समाज में विशेष महत्व है, यह एक ऐसा साधन है जो सभी वर्गों पर प्रभावी कार्य करता है। बच्चा, बूढा, युवा, नारी कोई भी हो हर व्यक्ति पर अपना प्रभाव जमाता है। अर्थात् वह समाज में अच्छे मानवीय मूल्यों को प्रकट करने एवं उन्हें स्थापित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। पत्रकारिता यह सभी वर्गों के लोगों द्वारा समाज पर लागू करता है और समाज का दिश–निर्देश करता हैं।